।। अथ श्री दुर्गा कवच ।।

जीवन में आकस्मिक संकट, बाधा,
उपद्रव एवं स्वयं की रक्षा हेतु ।

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित
।। अथ श्री दुर्गा कवच ।।
हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे हृदय में रहें,
आप हमारे मानस में नित्य बसो ।
हे माँ दुर्गे
दया करो,
क्षमा करो,
कृपा करो,
ममता करो,
करूणा करो,
रक्षा करो,
छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ।।
मंत्र - ॐ दुर्गे रक्षिणि स्वाहा

महर्षि मार्केण्डयजी ने कहा, "हे पितामह, मनुष्यमात्र की रक्षा का वह साधन बताइए, जिसे आपने किसी को नही बताया हो और जो अत्यंत गोपनीय हो।"

ब्रह्माजी ने कहा, "हे ब्राह्मण, समस्त प्राणियों का कल्याण करनेवाला अत्यंत गोपनीय माँ दुर्गा का कवच है। हे महामुने उसे आप सुनिए, हे मुनि, दुर्गा की नव शक्तियां है। पहली शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारीणी, तीसरी चंद्रघण्टा, चौथी कूष्माण्डा है, पांचवी स्कन्दमाता, छठ्ठी कात्यायनी, सातवी कालरात्री तथा आठवीं शक्ति महागौरी है, नौवीं शक्ति सिद्धीदात्री है। जो सभी सिद्धी देनेवाली है। नवदुर्गा नाम से शक्तियां सर्वज्ञ ब्रह्मदेव द्वारा बताई गई है। अग्नि में जल रहे को, युद्ध भूमि में शत्रुओ द्वारा घिरे हुए को और विपत्ति में फंसे हुए को भगवती दुर्गा की शरण लेनी चाहिये। एसा करन पर उस मनुष्य का कभी अग्नियुद्ध संकट में कुछ नहीं बिगड़ सकता। वह शोक, दुख तथा भय से मुक्त रहता हे। जो मनुष्य माँ दुर्गा का स्मरण करता है, उसे उन्नति व समृद्धि की प्राप्ति होती है। हे माँ, जो तुम्हारा स्मरण करते है, तुम अवश्य ही उनकी रक्षा करती हो। माँ चामुण्डा प्रेत के वाहन पर आरुढ रहती है, जबकि वाराही देवी महिष पर, ऐन्द्री का वाहन ऐरावत तथा वैष्णवी का वाहन गरुड है। माहेश्वरी देवी का वाहन बैल है। कौमारी मोर के वाहन पर सवांर है। लक्ष्मी के हाथो में कमल है। वे कमल के आसन पर विराजमान है। श्वेत वर्णवाली ईश्वरी बैल पर संवार है। भगवती ब्रह्माणी अर्थात सरस्वतीजी संपूर्ण म से हंसासन पर विराजमान रहती है। अनेक आभूषणों तथा रत्नों से

सुशोभित उपरोक्त सभी देवियां समस्त योग शक्तियों से युक्त है। इनके अतिरिक्त अन्य देवियां भक्तों की रक्षा के लिये क्रोधायुक्त होकर रथ पर संवार है। इनके हाथो में शंख, चक्र, गदा, शक्ति, हल एवं मुसल है। ये देवियां अपने हाथो में ढाल, तोमर, फरसा बांधनेवाला विशेष प्रकार का अस्त्र, भाला, त्रिशुल तथा उत्तम धनुष्यबाण धारण किये हुए है। सभी देवियां दैत्यों का नाश एवं भक्तों को भयमुक्त करने के लिये ही अस्त्र शस्त्रों से शोभायमान है। इनसे देवताओं की भी रक्षा होती है। महाघोर कार्य करने एवं महाभय का विनाश करनेवाली महाशक्तिशाली, महाउत्साही और महारुद्र की शक्ति आपको नमस्कार है। हे शत्रुओं का भय बढ़ानेवाली, अति तेज के कारण मैं तुम्हे देख नहीं पा रहा, ऐन्द्री शक्ति पूर्व दिशा की एवं अग्नेयी अग्नी कोण में मेरी रक्षा करे। वाराही दक्षिण दिशा में, तलवार धारण करने वाली नैऋत्य कोण में, वारुणी पश्चिम दिशा में तथा मृग पर विराजमान शक्ति वायव्य कोण में मेरी रक्षा करे। कार्तिकेय शक्ति कौमारी उत्तर दिशा में, शुल धारण करने वाली इशान्य कोण में, ब्रह्माणी उपर तथा वैष्णवी नीचे हमारी रक्षा करे। इसी प्रकार शव के उपर विराजमान चामुण्डा देवी दसो दिशाओं में हमारी रक्षा करे। आगे जया और पीछे विजया हमारी रक्षा करे। बाए भाग में अजिता, दाए भाग में अपराजिता, शिखा में उद्योतिनी तथा मस्तक की उमा निरंतर एवं नियमपूर्वक हमारी रक्षा करे। ललाट में मालाधारी, दोनों भ्रूँ में यशस्विनी, भ्रूँ के मध्य में त्रिनेता तथा नासिका में यमघण्टा हमारी रक्षा करे। दोनों नेत्रो के बीच में शंखिनी, दोनों कानो के मध्य में द्वारवासीनी, कपोलो की कालिका एवं कर्ण के मुल भाग में शांकरी हमारी रक्षा करे। नासिका के बीच के भाग की सुगन्धा, उपरी होठ की चर्चिका, नीचले होठ की अमृतकला तथा जिव्हा की सरस्वतीजी रक्षा करे। कौमारी हमारे दांतो की, चण्डिका कंठ की, चित्रघण्टा गले की तथा महामाया तालू की रक्षा करे। हमारे ठोडी की कामाख्या, वाणी की सर्वमंगला, ग्रिवा की भद्रकाली तथा रिढ प्रदेश की धनुष्य धारण करनेवाली रक्षा करे। कण्ठ से बाहर निलग्रीवा और कण्ठ की नली में नलकुंवरी, दोनों कंधो की खड्ग्नी तथा वज्र को धारण करनेवाली हमारी दोनों बांहो की रक्षा करे। दण्ड को धारण करनेवाली तथा अम्बिका उंगलियों की रक्षा करे। नखों की शुलेश्वरी और भूमि प्रदेश की कुलेश्वरी रक्षा करे। दोनों स्तनों की महादेवी एवं शोक का विनाश करनेवाली मन की, ललीता देवी हृदय में तथा शुलधारिणी उदर में स्थित होकर हमारी रक्षा करे। नाभी में कामीनी तथा गुह्य भाग में गुह्येश्वरी हमारी रक्षा करे। कामिका एवं पूतना लिंग की तथा महिषवाहीनी हमारे गुदा की रक्षा करे। हमारे कमर की भगवती तथा घुटनों की विन्ध्यवासीनी रक्षा करे। संपूर्ण कामनाओं को प्रधान करनेवाली महाबली देवी दोनों पिण्डलीयों की रक्षा करे। नारसिंही हमारे दोनों पैर के घुट्टीयों की, तैजसी पैरों के पिछले भाग की, श्रीदेवी पैरों की उंगलियों की तथा तलवासीनी पैरों में निचले भाग की रक्षा करे, उर्ध्वकोशीनी बालों की, कुबेर की शक्ति रोमावली के छिद्रों की तथा वागेश्वरी हमारे शरीर के उपरी भाग की रक्षा करे। पार्वती देवी हमारे रक्त, मज्जा, वसा, मांस, हड्डी तथा मेदे की रक्षा करे। आंतो की कालरात्री तथा पित्त की मुकूटेश्वरी रक्षा करे। पद्मावती मुलाधार की, चुडामणी कफ की, ज्वालामुखी नखराशी में उत्पन्न तेज की तथा अभेद्या सभी जोडों में विराजमान होकर हमारी रक्षा करे। ब्रह्माणी हमारे शुक्र की, क्षत्रेश्वरी छाया की तथा धर्मधारीणी अहंकार, मन एवं बुद्धि की रक्षा करे। वज्र को धारण करनेवाली देवी प्राण, अपान, व्यान, उदान एवं समान वायु की तथा कल्याण से

सुशोभित होनेवाली हमारे प्राणों की रक्षा करे। रस, रुप, गन्ध, शब्द और स्पर्श रुप विषयों का अनुभव करते समय योगिनी तथा सत्व, रज एवं तमोगुणों की रक्षा नारायणी देवी करे। वाराहीदेवी आयु की, वैष्णवीदेवी धर्म की तथा चक्र को धारण करनेवाली देवी यक्ष, किर्ती, लक्ष्मी, धन एवं विद्या की रक्षा करे। इंद्राणीदेवी मेरे कुल की तथा चंण्डिकादेवी हमारे पशुओं की रक्षा करे। महालक्ष्मी पुत्रों की एवं भैरवीदेवी हमारी पत्नी की रक्षा करे। क्षेमकरी देवी हमारे पथ की तथा कल्याण करनेवाले मार्ग की राजद्वार पर महालक्ष्मी रक्षा करे। तथा सभी और व्याप्त रहनेवाली विजया भय से हमारी रक्षा करे। इस कवच में जिस स्थान की रक्षा नहीं कही गई है उस आरक्षित स्थान में पाप का नाश करनेवाली जयंतिदेवी (तुम्हारी शक्ति) हमारी रक्षा करे।"

कल्याण का इच्छुक इस कवच में स्तवन के बिना एक पग भी यात्रा न करे। कवच का पाठ करके चलनेवाला व्यक्ति जहां जाता है उसे वहां धनलाभ होता है, विजय प्राप्त होती है और वह जो भी पाना चाहता है, उसे सहज ही अवश्य मिल जाता है।